International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 368-370

मध्यकालीन बीकानेर की वास्तुकला (16वीं से 18वीं शताब्दी)

सुरेन्द्र सिंह
शोधार्थी, इतिहास विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा, भारत।

सारांश
वास्तुकला का अर्थ भवनों के विन्यास, आंकलन और रचना की, तथा परिवर्तनशील समय, तकनीक और रूचि के अनुसार मानव की आवश्यकताओं को संतुष्ट करने योग्य सभी प्रकार के स्थानों के तर्कसंगत एवं बुद्धिसंगत निर्माण की कला, विज्ञान तथा तकनीक का संमिश्रण वास्तुकला की परिभाषा में आता है। मध्ययुगीन राजस्थान के स्थापत्य में राजप्रासाद, मन्दिरों और दुर्गों का निर्माण महत्वपूर्ण है। इस युग में स्थापत्य कला की एक विशेष शैली का विकास हुआ, जिसे हिन्दू स्थापत्य शैली कहा जात है। इस शैली की प्रमुख विशेषताएँ थी – शिल्प सौष्ठव, सुदृढ़ता, अलंकृत पद्धति, सुरक्षा, उपयोगिता, विशालता और विषयों की विविधता आदि। मुग़ल सत्ता के साथ समागम के पश्चात् राजस्थानी स्थापत्य में तुर्की और मुग़ल प्रभाव से नई शैली का विकास हुआ जिसे हिन्दू–मुस्लिम स्थापत्य शैली कहा गया है। बीकानेर की वास्तुकला को हम निम्न भागों में बांट सकते हैं – किले, मन्दिर, छतरीयां, जलाश्य, बावड़ियां। लेकिन हम यहां बीकानेर के किले में बने हुए प्रमुख भवनों की वास्तुकला पर प्रकाश डालेंगे।

मुख्य शब्द : वास्तुकला, भवन, दुर्ग, स्थापत्य, तकनीक, विन्यास

प्रस्तावना
वास्तुकला का अर्थ भवनों के विन्यास, आंकल्न और रचना की, तथा परिवर्तनशील समय, तकनीक और रूचि के अनुसार मानव की आवश्यकताओं को संतुष्ट करने योग्य सभी प्रकार के स्थानों के तर्कसंगत एवं बुद्धिसंगत निर्माण की कला, विज्ञान तथा तकनीक का संमिश्रण वास्तुकला की परिभाषा में आता है। परमेश्वरी लाल गुप्त के अनुसार भवन निर्माण एवं शिल्प विज्ञान का नाम वास्तुकला है।[1] इसका और स्पष्टीकरण किया जा सकता है। वास्तुकला ललितकला की वह शाखा रही है और है जिसका उद्देश्य औद्योगिकी का सहयोग लेते हुए उपयोगिता की दृष्टि से उत्तम भवन निर्माण करना है, जिनके पर्यावरण सुसंस्कृत एवं कलात्मक रूचि के लिए अत्यंत प्रिय, सौन्दर्य–भावना के पोषक तथा आनन्दकार एवं आनन्दवर्धक हों। प्रकृति, बुद्धि एवं रूचि द्वारा निर्धारित और नियमित कतिमय सिद्धान्तों और अनुपातों के अनुसार रचना करना इस कला का संबद्ध अंग है।[2] मानव संस्कृति के इतिहास में स्थापत्य का अपना स्वतन्त्र स्थान है। मध्ययुगीन राजस्थान के स्थापत्य में राजप्रासाद, मन्दिरों और दुर्गों का निर्माण महत्वपूर्ण है। इस युग में स्थापत्य कला की एक विशेष शैली का विकास हुआ, जिसे हिन्दू स्थापत्य शैली कहा जात है। इस शैली की प्रमुख विशेषताएँ थी – शिल्प सौष्ठव, सुदृढ़ता, अलंकृत पद्धति, सुरक्षा, उपयोगिता, विशालता और विषयों की विविधता आदि। मुग़ल सत्ता के साथ समागम के पश्चात् राजस्थानी स्थापत्य में तुर्की और मुग़ल प्रभाव से नई शैली का विकास हुआ जिसे हिन्दू–मुस्लिम स्थापत्य शैली कहा गया है।

बीकानेर की वास्तुकला को हम निम्न भागों में बांट सकते हैं – किले, मन्दिर, छतरीयां, जलाश्य, बावड़ियां। लेकिन हम यहां बीकानेर के किले में बने हुए प्रमुख भवनों की वास्तुकला पर प्रकाश डालेंगे।

जूनागढ़ का किला
जूनागढ़ का किला राजस्थान के बीकानेर राज्य में है। जूनागढ़ किले का मौलिक नाम चिंतामणि था। जूनागढ़ का शाब्दिक अर्थ है पुराना किला यह बीकानेर किले के नाम से जाना जाता था।[3] 20वीं शताब्दी के आरम्भ में इसका नाम बदलकर जूनागढ़ रखा गया। यह किला राजस्थान के उन प्रमुख किलों में शामिल है जो पहाड़ की ऊंचाई पर नहीं बने हैं। वर्तमान बीकानेर शहर किले के आस–पास ही विकसित हुआ है। इस किले का निर्माण बीकानेर के शासक राजा रायसिंह के प्रधानमंत्री करमचन्द की निगरानी मे किया गया था। इस किले का निर्माण 1574 ई. से 1594 ई. के दौरान हुआ था।[4] इस किले का निर्माण पुराने गढ़ के स्थान पर हुआ था। इस किले की परिधि 1078 गज है। इसके भीतर प्रवेश करने के लिए दो मुख्य द्वार हैं, जिनके बाद फिर तीन या चार दरवाजे हैं। कोट में स्थान–स्थान पर प्रायः 40 फुट ऊंची बुर्ज हैं और चारों और खाई बनी हुई है, जो उपर 30 फुट चौडी होकर नीचे तंग होती गई। इस खाई की गहराई 30 से 50 फुट तक है। इस किले पर केई बार आक्रमण हुए पर शत्रु बलपूर्वक इस पर कभी अधिकार न कर पाये।[5]

किले का प्रवेश द्वारा 'कर्णपोल' है। इसके आगे के दरवाजों में एक सूरज पोल है[6], जिसके दोनों पार्श्वों पर विशालकाय हाथी पर बैठी हुई दो मुर्तियां हैं, जो प्रसिद्ध वीरमल मेड़तियां और पत्ता चूंडावत (सीसोदिया) की (जो चित्तौड़गढ में बादशाह अकबर के मुकाबले में मारे गये थे।) हैं।[7] स्थापत्य व ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण इस किले के निर्माण में तुर्की की शैली अपनाई गई है, जिसमें दिवारों अन्दर की तरफ झुकी हुई हैं। किले में निर्मित महल में दिल्ली, आगरा व लाहौर स्थित महलों की झलक मिलती है।[8]

समय–समय पर इस किले में अनेक भवनों का निर्माण किया गया तथा उनकी मरम्मत का कार्य चलता रहा। 18वीं शताब्दी में भी इस किले में अन्य भवनों का निर्माण हुआ तथा मरम्मत कार्य भी हुआ। जूनागढ़ के किले के भीतर बनी संरचनाओं में महल और मन्दिर शामिल हैं। जिनका निर्माण लाल बलुआ पत्थर और संगमरमर द्वारा किया गया है।[9] इन महलों का वर्गीकरण उनके अनोखे आंगनों, छज्जों, खोखे और खिड़कियों द्वारा किया जाता है। किले के

मन्दिरों और महलों को संग्रहालय के रूप में संरक्षित कर दिया गया है जो राजस्थान के अतीत काल के महाराजाओं के जीवन शैली में अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। इस किले को मध्ययुगीन सैन्य वास्तुकला और सुन्दर आंतरिक सजावट के बीच एक विरोधाभास के नाम से भी जाना जाता है।[10]

किले के भीतर मौजूद महल

करण महल

करण महल जिसे सार्वजानिक सभा कक्ष भी कहा जाता है, करण महल बीकानेर का पहला स्मारक और राजपूताना का दूसरा सबसे पुराना स्मारक है, जो कलासिक मुगल शैली पर आधारित है।[11] इसकी रचना राजा करण सिंह के द्वारा 1680 ई. में की गई थी। इसके बाद महाराज अनुपसिंह ने 1690 ई. में अपने पिता करण सिंह के स्मारक के रूप में इसको महत्व प्रदान किया।[12] महल सफेद संगमरमर और प्लास्टर डिजाइजन की शुद्धता और विस्तार के मामले में मुगल शैली के समकक्ष है। अति सुन्दर आर्थिक डिजाइन दिल्ली के दिवान–ए–खास, रंग महल और मुमताज महल जैसी क्लासिक कला की विशेषता है।[13] इसके नीचे औरंगजेब कालीन शैली के प्रकार के छोटे बेल वाले कोलमों पर आराम करने वाले कूचदार मेहराब की पंक्ति है और एक बोर्ड कंगनी और आस–पास के गैलरी के समान एक लकड़ी की छत है।[14]

महाराज गजसिंह चतुर पर्यवेक्षक और एक विद्वान थे, जो मुस्लिम साम्राज्य को असहाय समझते थे, जहां कलात्मक जीवन का अवशेष खत्म हो गया था।[15] दिल्ली लाहौर और अन्य स्थानों से कुशल कारीगर लोग राजपूत राजाओं के संरक्षण में आये थे। गजसिंह ने उन्हें अपनी सेवा में शामिल किया। जिन्होंने बीकानेर की कला को गति प्रदान की। उन्होंने करण महल के पुर्ननिर्माण में अहम भूमिका निभाई।[16]

महाराजा गजसिंह ने करण महल में एक सिंहासन का निर्माण कराया जिसमें मुगल आभूषण शैली को राजपूत विस्तार के रूप दर्शाया गया है।[17] लेकिन इसमें रंगों की अधिकता है जो 17वीं और 18वीं शताब्दी के प्रारम्भिक डिजाइन की तुलना में मेहराबों के बीच घटी हुई प्रतीत होती है।[18] कोलमों के पुष्प ढालनों पर सोने का पानी चढ़ा हुआ है। दिवारों और गैलरी की छतें जो फूलों के गुलदस्ते, जो बास और कटोरे के क्षेत्र से ढकी हुई हैं उन्हें अंडाकार इकाईयों के साथ दिखाया गया है तथा उनके साथ बाहर अन्य फूलों की व्यवस्था साथ की गई है।[19]

करण महल में चांदी के सिंहासन के पीछे बीकानेर का राज्य ध्वज स्थापित है। इसमें केसरिया और कासुमल (केसरोन और लाल) नामक दो रंग हैं, ऊपरी रंग कासुमल बीकानेर शाही परिवार की अध्यक्षता करते हुए करणी माता का प्रतीक है, बीकानेर शाही परिवार के संरक्षक देता हैं। ध्वज के केन्द्र में बीकानेर राज्य के हथियारों का कथन 'जय जांगलधार बादशाह' है।[20]

फूल महल

फूल महल इस किले का सबसे पुराना भाग है और इसका निर्माण बीकानेर के राजा राय सिंह (1574–1612 ई.) ने करवाया था।[21] यह महल राजसिंह की रानी फूल कौर के नाम से बनाया गया था। इस महल में दो दरवाजे हैं, जहां पर बहुत अन्धकार रहता है। हालांकि इस कमी को दूर करने के लिए चमकदार दर्पण से अच्छी तरह से इसकी सजावट की गई है, जो सभी दीवारों पर बेहद फैला हुआ है इसको एक रूप में देखा जा सकता है। अगर आज हम फूल महल को देखते हैं तो फूल महल की सजावट काफी पुराने जमाने की प्रतित होती है। इस महल की भीतरी दिवार जो काफी पुरानी लगती है। जिसको देखकर हमें पुरानी तारीख में जाने का एहसास होता है। अनूप सिंह तथा सुजान सिंह के शासन काल में इस महल में प्लास्टर पैनल लगवाये ताकि दर्पण के द्वारा अन्धकार के भाग को बांटा जा सके।[22] इस प्लास्टर पैनल पर बोतलों को कप–कटोरों द्वारा चित्रित किया गया है। जिन पर फूलों की सुन्दर चित्रकारी की गई है। छोटे फूल के आकार के दर्पण को भीतरी पैनल के ढांचे में रखा गया है, जो काफी सुन्दर लगता है। केन्द्रीय आवास में सजावट गहराई से की गई ताकि सफेद संगमरमर प्लास्टर की पतली स्लैब से वास्तविक आवास तक पहुंच सके। प्रत्येक दीवार के ऊपरी हिस्से पर नारी प्रतिमा के ऊपरी भाग को उभारकर चित्रित किया गया है।[23] दिवारों के कुछ भाग पर अर्ध यूरोपिय, अर्ध मुस्लिम पोशाक लगाई गई है जो 1720–1780 ई. मुगल कलाकारों की कला को प्रदर्शित करते हैं।[24] जो सुजान सिंह, जोरावर सिंह तथा गजसिंह के समय को जाहिर करते हैं। इस महल में बने पहले दृश्य में प्राकृतिक फूलों की सजावट का सुन्दर कार्य किया गया है [25], जैसे मुगल लघु एल्बमों के हाशिये में पाये जाते हैं। संगमरमर प्लास्टर की पतली स्लैब में काट रखे हैं, जिनके नीचे कांच का दर्पण रखा गया है और जिसमें आभूषण रखे गये हैं। जो चमकते हुए फूलदान सा लगता है। आखिरकार बड़े दर्पण को दीवारों के डेड़ोस के केन्द्र में इस तरह प्रतिबिंबित किया गया है ताकि वह जमीन पर बैठी हुई महिलाओं द्वारा इस्तेमाल किया जा सके। कंगनी के चारों ओर एक फिरोज पेटिंग : कृष्ण लीला, नायक और रागमाला विषयों से सम्बन्धित हैं, जिसमें प्रत्येक विषय अलग दिखाई देता है।[26]

फूल महल पुराने रन निवासों में बनाया गया था। लेकिन गजसिंह ने इसके सामने एक बन्द गैलरी को एक झरोखा और कुछ छोटे गलियारों के साथ जोड़ दिया। जिसकी रूपरेखा दक्षिण भाग के केन्द्रीय गढ के अर्द्ध अष्टकोणीय बनावट के आधार पर की गई [27] तथा डड़ोस को सुन्दर फूलों के टुकड़ों से सजाया गया। जो आगरे के किले और ताजमहल में हुए जड़ाऊ काम को प्रदर्शित करते हैं।[28] दीवारों के ऊपर विभिन्न तरह के फूलों और डिजाइनों को चित्रित किया गया है, जो बहुत सुन्दर लगते हैं। जिनमें से कुछ अब भी मौजूद हैं। जैसे शाही शिकार सवारी या हाथी सवारी तथा अन्य जानवरों की शिकार श्रृंखला का प्रतिनिधित्व करने वाले चित्र हैं। लेकिन भीतरी चित्रकारी के चित्रों और आइने की सजावट और प्लास्टर की आकृति को सूरत सिंह तथा रतन सिंह द्वारा जोड़ा गया था।[29]

अनूप महल

यह बीकानेर किले का सर्वाधिक अंलकृत और सुशोभित है। अनूपमहल महाराज अनूपसिंह का दरबार–ए–खास था। जहां वे विशिष्ट अतिथियों से मिला करते थे।[30] समूचा महल, छते तथा खम्भों पर सोने का जड़ाऊ काम हुआ है। इसलिए यह सबसे अलंकृत महल है। बीकानेर किले के सिंहासनों में से एक यहां आज भी है। दरवाजों पर भी सुन्दर चित्रकारी की गई है। अनूप महल की दीवारों पर की गई कलाकृतियों से 'संबंधित जानकारी' दर्शाता एक फलक यहां लगाया गया है। इसके अनुसार, 17वीं शताब्दी के शासक करण सिंह गोलकुंडा अभियान पर गये थे। तब वहां के एक स्थानीय कलाकार ने उन्हें सोने से बनी कलाकृतियां भेंट में दी थीं। उस कलाकृति को बीकानेर के अनुपमहल के ऊपर लगाया गया है[31], जो सम्पूर्ण सोने से बने स्तम्भ का आभास देता था। महाराज कर्णसिंह की जिज्ञासा को देखकर उस कलाकार ने उन्हें बतलाया कि वह जैसलमेर का मूल निवासी था। परन्तु कार्य हेतु उसका परिवार दक्कन में स्थापित हो गया। महाराजा करणसिंह ने उसे

बीकानेर आमंत्रित किया व शाही संरक्षण प्रदान किया। इस कला शैली को उस्ता कला कहा जाने लगा।[32] इस कला शैली का प्रभाव 18वीं शताब्दी की बीकानेर चित्रकला शैली पर स्पष्ट दिखाई देता है। इस महल में एक लकड़ी की दीवार है, जिस पर सूक्ष्म चित्रकारी की गयी है।[33] राजस्थान में स्थित होने के कारण इन कलाकृतियों में कांच का भरपूर समावेश है। इस महल को बाहर से देखने पर यह सादा व श्वेत रंग का प्रतीत होता है।

चन्द्र महल

चन्द्र महल इस भवन का सबसे आलीशान कमरा है। जिसे महाराजा गजसिंह ने अपने रननिवास के लिए बनवाया था। इसे चन्द्रमहल की साल भी कहा जाता है। इसमें तीन खुले हाल हैं। जिनमें से एक बन्द कर दिया गया है। इसकी महराबों पर सफेद संगमरमर के साथ चूने का प्रयोग किया गया। जिसमें मुगल शैली का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इस भवन में फूल–पत्तियों की जो चित्रकारी की गई है वह करण महल से मिलती है।[34] इसके अतिरिक्त इस महल में देवताओं की मूर्तियां स्थापित की गई हैं तथा उनकी चित्रकारी भी की गई है। जिसमें सोने और कीमती पत्थरों का जड़ाऊ अलंकरण किया गया है। इस महल के श्यनकक्ष में दर्पणों को कुछ इस तरह से लगाया गया है कि यदि कोई घुसपैठिया उनके कमरे में प्रवेश करता है तो उन्हें अपने बिस्तर से ही देख सकते थे। जिस तरह आजगल सीसीटीवी कैमरों का प्रचलन है।

निष्कर्ष

इस प्रकार इस शोध पत्र में बीकानेर की वास्तुकला तथा उनकी विशेषताओं के बारे में विस्तृत रूप से प्रकाश डाला गया है जो बीकानेर राज्य की सांस्कृतिक दशा का अभिन्न हिस्सा है। बीकानेर में सफेद संगमरमर के साथ–साथ चूने का प्रयोग करते हुए फूल–पत्तियों आदि की चित्रकारी के साथ सोने और कीमती पत्थरों का जड़ाऊ अलंकरण किया गया है। यहां की स्थापत्य कला में कहीं–कहीं मुगल वास्तुकाल की भी झलक को प्रस्तुत करता है।

संदर्भ

1. गुप्त परमेश्वरी लाल, भारतीय वास्तुकला, विश्वविद्यालय प्रकाशन, दिल्ली, 2006, पृ. 1
2. जी.एच.आर. टॉलोस्टन, पराडीगग्ज ऑफ इण्डियन आर्किटेक्चर, स्पेस एण्ड लाईफ इन रिप्रेजेन्ट एण्ड डिजाईन, न्यूयार्क, 1998, पृ. 1–2
3. हरमन गोएटज, आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर बीकानेर स्टेट, पृ. 60
4. ओझा, गौरीशंकर,, बीकानेर राज्य का इतिहास, भाग–1, पृ. 55; मोहन लाल गुप्ता, बीकानेर : जिलेवार सांस्कृतिक इतिहास, पृ. 22
5. दयालदास री ख्यात, भाग–2, पत्र 14
6. हरमन गोएटज, पूर्वोक्त, पृ. 60
7. ओझा, पूर्वोक्त, पृ. 55
8. हरमन गोएटज, आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर बीकानेर स्टेट, पृ. 61
9. वही, पृ. 61
10. वही, पृ. 72
11. मोहन लाल गुप्ता, पूर्वोक्त, पृ. 22
12. श्रीबड़े कमठाणे री बही, वि.सं. 1749, नं. 1
13. बड़े कमठाणे री बही, वि.सं. 1819, नं. 204
14. हरमन गोएटज, पूर्वोक्त, पृ. 72
15. कोठ रे कमठाणे री बही, वि.सं. 1812–13, नं. 203
16. श्रीबड़े कमठाणे री बही, वि.सं. 1821, नं. 5
17. कोठ रे कमठाणे री बही, वि.सं. 1812–13, नं. 203
18. हरमन गोएटज, पूर्वोक्त, पृ. 72
19. वही
20. करणी सिंह, बीकानेर राज्य के केन्द्रीय सत्ता के साथ सम्बन्ध, पृ. 136
21. हरमन गोएटज, पूर्वोक्त, पृ. 72–73; ओझा, पूर्वोक्त, पृ. 5; कमठाणे री बही, वि.सं. 1727, नं. 203
22. हरमन गोएटज, पूर्वोक्त, पृ. 73
23. कोठ रे कमठाणे री बही, वि.सं. 1819, नं. 24
24. वही, वि.सं. 1825, नं. 3
25. मोहन लाल गुप्त, पूर्वोक्त, पृ. 22
26. हरमन गोएटज, पूर्वोक्त, पृ. 78
27. कोठ रे कमठाणे री बही, वि.सं. 1812, नं. 4
28. करणी सिंह, पूर्वोक्त, पृ. 136
29. हरमन गोएटज, पूर्वोक्त, पृ. 78
30. वही
31. कोठ रे कमठाणे री बही, वि.सं. 1754–61, नं. 135
32. करणी सिंह, पूर्वोक्त, पृ. 136
33. कोठ रे कमठाणे रह बही, वि.सं. 1812, नं. 204
34. हरमन गोएटस, पूर्वोक्त, पृ. 77–78